तिलक की पुण्य तिथि 1 अगस्त पर विशेष

चार बार जबलपुर आए थे बाल गंगाधर तिलक

❑ निधि श्रीवास्तव

स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े राष्ट्रीय नेताओं के लिए जबलपुर का काफी महत्व था। जबलपुर की केन्द्रीय भौगोलिक स्थिति तथा यहाँ के लोगों की आज़ादी के प्रति बेपनाह ललक की वजह से नरम एवं गरम विचारधारा से ताल्लुक रखने वाले उस समय के प्रायः सभी बड़े राष्ट्रीय नेताओं ने जबलपुर की यात्रा कर स्वतंत्रता संग्राम के लिए न सिर्फ वैचारिक वातावरण तैयार किया, बल्कि लोगों में आज़ादी हासिल करने के लिए जोश, जज्बा और जुनून का संचार किया। पूरे देश में घूम-घूमकर आज़ादी की अलख जगाने निकले पं. लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने इसी सिलसिले में चार बार जबलपुर की यात्रायें की।

"स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है"- का नारा देने की वजह से तिलक जी पहले ही जन-जन के लोकप्रिय नेता बन चुके थे। उनके सम्मोहक और करिश्माई व्यक्तित्व के साथ-साथ जोशीले भाषणों से युवा वर्ग काफी प्रभावित था। लोकमान्य तिलक पहली बार 2 अक्टूबर सन् 1916 को जबलपुर पधारे थे। तिलक जी दूसरी बार 6 अक्टूबर सन् 1917 को, तीसरी बार सन् 1918 में तथा चौथी बार 3 और 4 जून सन् 1920 को जबलपुर आये थे। राष्ट्रीय आन्दोलन में गरम दल के नेता के रूप में पहचाने जाने वाले तिलक जी का सशस्त्र क्रांति में अटूट विश्वास था। वे कहा करते थे कि बिना बलिदान दिए स्वतंत्रता हासिल नहीं की जा सकती। यह वह समय था जब तिलक जी के विचारों से प्रेरित होकर चापेकर बन्धु, खुदीराम बोस और श्री फड़के ने आज़ादी के लिए अपने जीवन की आहुति दे दी थी। इस

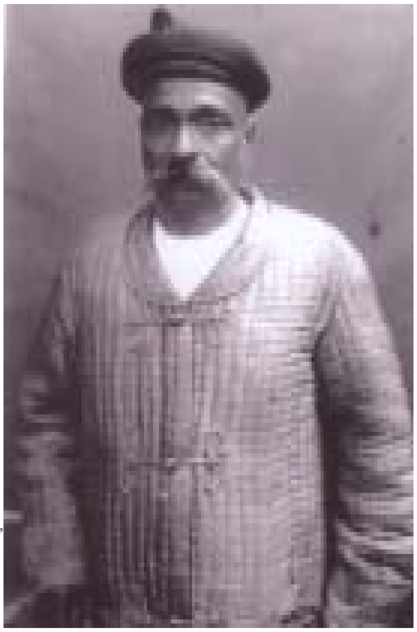

छाया संकलन : मनोज कुमार श्रीवास्तव

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

बलिदान ने जबलपुर सहित पूरे देश में आज़ादी की धधक रही ज्वाला में घी का काम किया।

तिलक जी के जबलपुर आने के पहले से ही प्रमुख क्रांतिकारी देशभक्तों ने जबलपुर को अपनी कर्मस्थली बना लिया था। लार्ड कर्जन द्वारा 16 अक्टूबर, 1905 को बंग विभाजन आदेश के बाद तो बंगाली समुदाय में भी अंग्रेजों के विरुद्ध खासा आक्रोश था। रासबिहारी बोस की अगुवाई में क्रांतिकारी गतिविधियाँ शुरू हुई। इसी सिलसिले में श्री बोस जबलपुर आये और चिदम्बरम् पिल्लै के साथ मिलकर रानी दुर्गावती के मदन महल किले से लगी पहाड़ियों में बम का परीक्षण किया। बाद में यही बम सन् 1911 में हार्डिंग्ज के ऊपर चाँदनी चौक में फेंका गया। रासबिहारी बोस को जबलपुर से व्यापक समर्थन मिला और पांच विशेष सहयोगी मिले। इनमें सिहोरा के अधिवक्ता शिवप्रसाद वर्मा, हितकारिणी शाला के शिक्षकद्वय शैलेन्द्रनाथ घोष व मास्टर देवीचरण सिंह, चिदम्बरम पिल्लै तथा जबलपुर की रॉली ब्रदर्स की दुकान के बाबू प्रफुल्ल कुमार चक्रवर्ती मुख्य थे, जिन्होंने एक लम्बे अर्से तक जबलपुर में क्रांति की मशाल जलाये रखी थी। बाद में अंग्रेजों ने इन सबको नजरबंद कर लिया। फलस्वरूप शैलेन्द्रनाथ घोष को जबेरा में, प्रफुल्ल कुमार चक्रवर्ती को बरेला में, शिवप्रसाद को लखनादौन में, मास्टर देवीचरण सिंह को धूमा में और चिदम्बरम पिल्लै को जबलपुर में नजरबंद करके रखा गया था। इससे प्रतीत होता है कि तिलक की यात्रा के पहले से ही जबलपुर क्रांतिकारियों का प्रमुख गढ़ बन चुका था।

तिलक की पहली एवं दूसरी यात्रा

लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन से लौटते समय 2 अक्टूबर सन् 1916 को पहली बार तिलक जी जबलपुर आये। उन्होंने जबलपुर की अलफ खाँ की तलैया में उत्तेजक और प्रभावशाली भाषण दिया। इस ऐतिहासिक घटना के उपलक्ष्य में अलफ खाँ की तलैया को तिलकभूमि तलैया कहा जाने लगा। अब यह स्थान इसी नाम से जाना जाता है। तिलक जी की इस यात्रा में उनके साथ दादा साहेब खापर्डे तथा डॉ. मुन्जे भी थे। तिलक सहित सभी लोग साने के बाड़े में ठहरे थे। लोकमान्य तिलक दूसरी बार 6 अक्टूबर सन् 1917 को जबलपुर पधारे और विष्णुदत्त शुक्ल के भालदारपुरा निवास में ठहरे। दीवान बहादुर वल्लभदास की बग्गी उनकी सेवा में रहती थी। विष्णुदयाल भार्गव ने स्टेशन पर उनके स्वागत में एक अभिनन्दन पत्र पढ़ा, जिसमें

तिलक भूमि तलैया का दृश्य

तिलक भूमि तलैया में लगा शिलालेख

दोनों छायाचित्र : उमेश ठाकुर

उनकी प्रतिभा का गुणगान किया गया था। तिलक जी को सभास्थल तक जुलूस के साथ ले जाया गया, जहाँ विष्णुदत्त शुक्ल की अध्यक्षता में व्याख्यान का आयोजन किया गया था। तिलक जी भालदारपुरा में गोपाल भट्ट के घर तक पैदल गये। गोपाल भट्ट भारतीय दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान तथा नामचीन ज्योतिषी थे। दूसरी यात्रा के दूसरे दिन 7 अक्टूबर सन् 1917 को बालमुकुन्द त्रिपाठी द्वारा लोकमान्य तिलक के सम्मान में लिखे गये स्वागत गीत का सस्वर गायन किया गया, जिसकी कुछ पंक्तियाँ निम्नानुसार हैं:-

धन्य जबलपुर ग्राम धन्य हैं सब नर-नारी।
धन्य-धन्य वन बाग, सब आज सुखारी।।
पावस हुआ व्यतीत, शरद की शीतलताई।।
आई-आई दौड़, आपके ढिंग प्रिय भाई।।
सब सुफल प्रार्थनायें हुईं।
नगर उठा सारा किलक।।
आ पहुँचे श्री भारत तिलक।
जयति-जयति, जय-जय तिलक।।

देखो स्वराज्य की गूँज से।
गूँज रहा सारा फलक।।
है हमें यही बतला रहे।
जयति-जयति, जय-जय तिलक।।

इसी सभा से लोकमान्य तिलक को जबलपुर के नागरिकों की ओर से एक मान-पत्र भी भेंट किया गया था। यह मान-पत्र पंडित बाल मुकुन्द त्रिपाठी ने अपने हाथों से लिखा था। तिलक को समर्पित किये जाने वाले इस मान पत्र में "विनीत" के नीचे कई लोग अपना नाम जुड़वाना चाहते थे, जबकि यह संभव नहीं था। इसलिए यह थोड़े विवाद का विषय बना। इसके बाद मान-पत्र में विनीत के नीचे अंकित नामों सुरेशचन्द्र मुखर्जी, गणेश वासुदेव साने, नाथूराम मोदी, राधिका प्रसाद वर्मा, मनोहर कृष्ण गोलवलकर, सूरज प्रसाद शुक्ल, डॉ. हर्षे, डॉ. नारवड़े आदि के नामों को हटाकर नया मान-पत्र बनाया गया, जिसमें "श्रीमान् के चरण रज प्रेमी जबलपुर निवासी" लिखकर विवाद का पटाक्षेप किया गया।

तिलक का तीसरा और चौथा आगमन

अंग्रेजों ने देश की जनता को अपमानित करने और क्रांतिकारियों के विरुद्ध कठोर एवं दमनकारी कार्यवाही करने का अधिकार प्राप्त करने के उद्देश्य से 10 दिसम्बर, 1917 को रोलट कमीशन की स्थापना की। जनता ने इसका व्यापक विरोध किया। लोकमान्य तिलक ने देशव्यापी दौरा कर जनमानस को अंग्रेजों की बर्बरतापूर्ण योजना से आगाह किया। रोलट एक्ट के विरोध में वैचारिक जनमत तैयार किया। इस क्रम में सन् 1918 में लोकमान्य तिलक तीसरी बार जबलपुर आये। यहाँ उन्होंने एक्ट के खिलाफ काफी उग्र विचार व्यक्त किया, लेकिन बड़े आश्चर्य की बात यह रही कि जबलपुर में ब्रिटिश सरकार ने न तो उन्हें गिरफ्तार किया और न ही कोई सजा दी।

लोकमान्य तिलक का चौथी और अन्तिम बार जबलपुर आगमन 3 जून सन् 1920 को हुआ था। वे यहाँ 3 जून एवं 4 जून को दो दिन रहे। जबलपुर की अपनी इस यात्रा के दौरान तिलक जी ने ब्रिटिश सरकार द्वारा लागू किये गये सुधारों की मुखालफ़त करते हुए दो मर्मस्पर्शी भाषण दिए। तिलक के भाषणों का जनता पर व्यापक असर हुआ। लोकमान्य तिलक ने जबलपुर के बुद्धिजीवियों, समाज सुधारकों तथा स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों से भी गहन चर्चा की। जबलपुर से प्रस्थान करने के बाद एक अगस्त सन् 1920 को बंबई के सरदार गृह में उनका अचानक निधन हो गया। स्वतंत्रता की इस जलती हुई मशाल के अचानक बुझ जाने से सारा देश शोकाकुल हो उठा। जबलपुर भी इससे अछूता नहीं रहा। लोगों ने अपने व्यवसाय बंद करके तिलक जी को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की।

(लेखिका इतिहासविद्, शिक्षा शास्त्री एवं समीक्षक हैं।)